सामुदायिक पुस्तकालय : आनंद घर
(Community Library – Anand House)

वर्षा श्रीवास्तव (सहायक अध्यापक)
उच्च प्राथमिकविद्यालय जुझारपुर, विकास खण्ड–अकराबाद,
जनपद–अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

पूर्व की स्थिति –

विद्यालय में पुस्तकालय तो था, जहाँ बच्चे आनंद के साथ पुस्तकें पढ़ते थे, किन्तु एक गंभीर समस्या सीखने की निरंतरता का टूटना थी। ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन अवकाश में जब विद्यालय बंद हो जाते थे, तो बच्चों का पुस्तकों से संपर्क पूरी तरह टूट जाता था।

नामांकन भ्रमण के दौरान शिक्षिका ने महसूस किया कि कई अभिभावक और 'ड्रॉपआउट' बच्चे, जो पढ़ने की ललक रखते थे, वे संसाधनों के अभाव में वंचित थे। कुछ बच्चे हिंदी तक ठीक से नहीं पढ़ पाते थे। मुझे अनुभव हुआ कि केवल विद्यालयी समय तक सीमित पुस्तकालय बच्चों के सर्वांगीण विकास और 'निपुण' लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता थी एक ऐसी व्यवस्था की, जो विद्यालय की चारदीवारी से बाहर निकलकर समुदाय के बीच 'शिक्षा की अलख' जगा सके।

उद्देश्य जहाँ चाह, वहाँ राह– इस आदर्श वाक्य को चरितार्थ करते हुए, इस नवाचार का मूल ध्येय विद्यालय को **'आनंद घर'** के रूप में स्थापित करना और साक्षरता को जन–जन तक पहुँचाना है।

- निर्बाध शिक्षण: विद्यालय अवकाश के दिनों में भी बच्चों को पठन–पाठन से जोड़े रखना।
- सामुदायिक साक्षरता: 'नवभारत साक्षरता अभियान' को गति प्रदान करना तथा रसोइया, अभिभावकों और ग्रामीणों को भी पढ़ने के अवसर देना।
- संसाधन उपलब्धता: समुदाय के सहयोग से गांव में ही सुलभ 'ज्ञान केंद्र' स्थापित करना।

क्रियान्वयन –

विद्यालय का डिजिटल पुस्तकालय: पुस्तकालय एक ऐसा स्थान होता है जहां पर बच्चे और बड़े दोनों ही आनंद के साथ पुस्तकों को देखते और पढ़ते हैं I यह एक ऐसा स्थान होता है जहां पर रखी किताबों की दुनिया में हर कोई सैर करना चाहता है। हमारे विद्यालय के प्रत्येक कक्षा–कक्ष में बच्चों के लिए पुस्तकालय स्थापित है। प्रतिदिन बच्चे यहां पर बैठकर पुस्तकों को पढ़ते हैं। हमने विद्यार्थियों के सहयोग से विद्यालय की पुस्तकालय समिति बनाई हुई है जो प्रतिदिन बच्चों को पुस्तक आवंटित करने और पढ़ने के बाद उसे वापस लेने का कार्य करती है। साथ ही साथ पुस्तकालय समिति का कार्य पुस्तकों को सहेजने और समय–समय पर पुस्तकालय की दीवार पर प्रेरक वचनों को लगाने पुस्तकालय को सजाने और क्षतिग्रस्त पुस्तकों की मरम्मत का भी होता है। हमारा विद्यालय उच्च प्राथमिक स्तर का है, नामांकन के समय जब दूसरे गांव के परिवारों से संपर्क किया और उन्हें शिक्षा के प्रति जागरूक करते हुए उनके ड्रॉपआउट बच्चों का एडमिशन अपने विद्यालय में कराया तो शिक्षिका ने देखा कि कुछ बच्चे हिंदी की किताब भी नहीं पढ़ पा रहे हैं, लेकिन जब इन बच्चों ने पुस्तकालय में रखी रंग बिरंगी किताबें देखीं और विद्यालय के अन्य बच्चों को इन्हें पढ़ते हुए देखा तो इनका मन भी किताबों के प्रति आकर्षित हुआ और फिर मन लगाकर इन बच्चों ने पढ़ाई करना शुरू किया।

कुछ समय पश्चात हिंदी के साथ साथ वे अब अंग्रेजी की किताबें भी पढ़ने लगे हैं। पुस्तकालय में बच्चा बिना किसी दबाव के स्वयं ही सीखने के प्रति प्रेरित होता है और धीरे–धीरे पढ़ना सीख जाता है। कहा भी गया है–"जहां चाह, वहां राह।" यहां एक बात ध्यान देने वाली है कि इस प्रकार से बच्चे का सीखना आनंदमय होता है और विद्यालयों को आनंद घर के रूप में स्थापित करने में सहायक होता है। एक शिक्षक के रूप में शिक्षिका ने यह पाया कि सभी बच्चे चाहे वह पढ़ने में होशियार हों या कमजोर पुस्तकालय में पुस्तके पढ़ने में बहुत रूचि लेते हैं। किताबों के रंग–बिरंगे चित्र, कहानियां और कविताएं उन्हें बहुत आकर्षित करते हैं। जब बच्चे को पुस्तकालय में पढ़ने का अवसर मिलने लगता है तब उसके व्यक्तित्व में भी निखार आने लगता है। हम कह सकते हैं कि पुस्तकालय देश के लिए बेहतर नागरिक तैयार करने में अपना अमूल्य योगदान देते हैं।

सामुदायिक पुस्तकालय जुझारपुर – विद्यालय के बच्चों से बातचीत के दौरान शिक्षिका ने यह पाया कि गर्मी और सर्दी की छुट्टियों में भी वे पुस्तकालय की किताबों को पढ़ना चाहते हैं और यहीं से मन में विचार आया कि बच्चों के लिए गांव में भी एक सामुदायिक पुस्तकालय होना चाहिए। जहां पर बच्चे छुट्टियों में भी रोजाना किताबें पढ़ सके। सोचा कि क्यों ना एक ऐसा पुस्तकालय स्थापित किया जाए जहां पर बच्चों के साथ–साथ उनके अभिभावक और गांव का कोई भी व्यक्ति किताबें पढ़ सके। हमारे विद्यालय में तीन गांव से बच्चे पढ़ने आते हैं जुझारपुर, दरियापुर और करहला। सबसे पहले गांव जुझारपुर में बीडीसी मेंबर के घर पर सामुदायिक पुस्तकालय स्थापित करने की योजना बनाई। उनके परिवार के दो बच्चे हमारे विद्यालय में अध्ययनरत थे। उनसे जाकर संपर्क किया और अपनी योजना बताई उन्होंने सहर्ष अपने घर में पुस्तकालय स्थापित करने की सहमति दे दी। इस प्रकार समुदाय का सहयोग लेते हुए मई 2022 में बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर गांव जुझारपुर में 'सामुदायिक पुस्तकालय–जुझारपुर' की स्थापना की जिसका उद्घाटन बीडीसी मेंबर के परिवार की ही सबसे वरिष्ठ महिला से करवाया गया। पुस्तकालय में बच्चों के पढ़ने के लिए हिंदी और अंग्रेजी की लगभग 50 किताबें रखी गई। इसके साथ ही पुस्तकालय में बच्चों के द्वारा बनाई गई किताबें भी रखी गई जिसमें उन्होंने अपनी बनाई कहानी और कविताएं लिखी थी और रंग–बिरंगे चित्र बनाए थे। पुस्तकालय का उद्घाटन होते ही बच्चे और बड़े सभी किताबों को लेकर पढ़ने लगे। उनका किताबों के प्रति आकर्षण देखते ही बनता था।

सामुदायिक पुस्तकालय दरियापुर – इसी दिन गांव दरियापुर में भी विद्यालय के एक पूर्व छात्र भुवनेश जिसके दो भाई बहन हमारे विद्यालय में अध्ययनरत थे के घर पर समुदाय का सहयोग लेते हुए 'सामुदायिक पुस्तकालय– दरियापुर' की स्थापना की गई। इस पुस्तकालय में भी 50 हिंदी और अंग्रेजी की कहानियों की किताबें और विभिन्न प्रकार के शैक्षिक चार्ट व बच्चों द्वारा निर्मित किताबें रखी गई। सामुदायिक पुस्तकालय स्थापित करते समय यह भी ध्यान रखा गया कि ऐसी जगह का चुनाव किया जाए जहां पर सभी बच्चे और बड़े आसानी से किताबें पढ़ने आ–जा सके। दोनों पुस्तकालयों के संचालन की जिम्मेदारी विद्यालय की मीना मंच समिति और पुरातन छात्र समिति को दी गई। जनपद के लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक जागरण ने इस खबर को प्रमुखता से अपने अखबार में स्थान दिया तथा इस कार्य की प्रशंसा की गई। दूरदर्शन की टीम ने भी विद्यालय के पुस्तकालय तथा दोनों गाँव में खुले इस सामुदायिक पुस्तकालय को देखा और शिक्षिका, बच्चों का व ग्रामवासियों का इंटरव्यू लिया और सामुदायिक पुस्तकालय की स्थापना को राष्ट्रीय चैनल दूरदर्शन की न्यूज़ में स्थान देते हुए कार्यों की सराहना की जो कि विद्यालय परिवार के लिए अत्यंत गौरव की बात थी। अब शिक्षिका का उद्देश्य तीसरे गाँव करहला में भी सामुदायिक पुस्तकालय स्थापित करना था।

सामुदायिक पुस्तकालय करहला – मई 2023 में गाँव करहला में भी समुदाय का सहयोग लेते हुए 'सामुदायिक पुस्तकालय–करहला' की स्थापना की। यह पुस्तकालय हमारे विद्यालय में अध्ययनरत एक छात्रा दिव्या के घर पर स्थापित किया गया है। इस पुस्तकालय में भी अंग्रेजी व हिंदी की लगभग 70 कहानियों की किताबें, शैक्षिक चार्ट रखे गए हैं साथ ही इसमें प्रतिदिन अखबार की भी व्यवस्था की गई है। जिससे बच्चे और बड़े सभी प्रतिदिन समाज में हो रही घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकें और अपने सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि कर सकें। 20 मई से विद्यालय की छुट्टियां हो जाती हैं और विद्यालय का पुस्तकालय बंद हो जाता है लेकिन मुझे खुशी है कि तीनों गांव के बच्चे और बड़े सामुदायिक पुस्तकालय का उपयोग कर अपने ज्ञान में सतत वृद्धि करते हैं और किताबों से जुड़े रहते हैं और यही इन सामुदायिक पुस्तकालयों की स्थापना का उद्देश्य भी है।

प्रभाव –

सामुदायिक सहयोग से किए गए इस प्रयास के परिणाम अत्यंत दूरगामी और सकारात्मक रहे हैं:

1. शत–प्रतिशत ठहराव: विद्यालय का ड्रॉपआउट रेट 'शून्य' हो गया है और नामांकन तथा उपस्थिति में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

2. सक्रिय साक्षरता: अब केवल बच्चे ही नहीं, बल्कि विद्यालय की रसोइया, सफाई कर्मचारी और गांव की महिलाएं भी सामुदायिक पुस्तकालय का लाभ उठा रही हैं, जिससे 'नवभारत साक्षरता अभियान' सफल हो रहा है।

3. प्रतिभा का विकास: बच्चों द्वारा स्वरचित कविताएं और कहानियां अब विभिन्न प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में प्रकाशित हो रही हैं और वे जनपद स्तरीय निबंध प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत हो रहे हैं।

4. राष्ट्रीय पहचान: इस अनूठी पहल को दैनिक जागरण ने प्रमुखता से प्रकाशित किया और दूरदर्शन की टीम ने गांव में आकर कवरेज की, जो हमारे विद्यालय और समुदाय के लिए गौरव का विषय है।

दूरदर्शन पर भी सामुदायिक पुस्तकालय स्थापित करने की खबर दिखाई गई।